

वंशी माहेश्वरी

57, मंगलवारा

पिपरिया, म.प्र. 461-775

फोन : 149

आदरणीय राजा साह,

आप के जाने के बाद साहजिकاً पेन हो गया, अभी भी मन में है
दिल्ली आ सकूँ. लगता है आना नहीं हो पायेगा।

श्रुत्य, सृष्टि - सृष्टियों आप के हाथ, धामों में।

उत्साह, शांति का नेतृत्व सहकार आप के हाथ. हमेशा की तरह पावन, अनिमल।

स्नेह की ऊँची-जीवन में, नीचे की सामर्थ्य में - प्रबलित है।

उन क्षणों की सृष्टियों केभीनी और जिज्ञासा अरु देखी है जहाँ लगान और एहसास
का जन्म होता है।

यहाँ सभी स्वच्छ सृष्टियों के अंग्रेज आकार की बुनावट में लगे हैं - जो आप के
साथ थे. वे हैं निरंतर। आप के हाथ।

22 फरवरी 22 नवम्बर।

जन्म दिन के 48 दिनों देश में चले जायेगे। (64 वर्ष देश में ही रहे होंगे)

वर्षा की चढ़कों में आप और अपनी धमकियों में वर्षा।

सतत काम के लिए - नंदलाल जी की पुण्य स्मृति. कभीपर जाना अच्छा है।

पीछे हूँ अभी आकाश को गहरा नीला ज़रा।

रंगों की चढ़कों में बहता सृष्टियों का संगीत।

आज, अभी नई काम उठा तो आपरो यह पत्र।

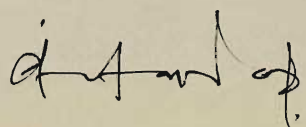
दूर ले रहा हूँ अभी है 2 सप्ताह के भीतर गीक हो जाऊँगा।

दिल्ली जब भी जाऊँगा - रचना भी, वृत्ति भी हो अँधे कौँगा।

उधे अँधे दिन में उगा में कहियेगा। 'तनाव' का ताज़ा अँधे अँधे है।

पीछे में आदरणीय आकाश को भेरा उगा में. सृष्टियों. न जाने की विरासत.
पत्र की नीचे प्रतीका देगा।

15/2/86

 आपका. वही.